विपश्यना

साधकों का
मासिक प्रेरणा

वार्षिक शुल्क रु. 30/-
आजीवन शुल्क रु. 500/-

बुद्धवर्ष 2552, भाद्रपद पूर्णिमा, 15 सितंबर, 2008 वर्ष 38 अंक 3

For Patrika in various languages, visit: www.vri.dhamma.org/newsletters

धम्मवाणी

यञ्हि किच्चं अपविद्धं, अकिच्चं पन कयिरति।
उन्नळानं पमत्तानं, तेसं वड्ढन्ति आसवा॥

धम्मपद २९२, पकिण्णकवग्गो

जो करणीय से हाथ खींच ले किंतु अकरणीय को करे, ऐसे खोखले (घमंडी) प्रमादियों के आश्रव (चित्तमल) बढ़ते हैं।

[बुद्धजीवन-चित्रावली]

(अभी तक विपश्यना पत्रिका में "बुद्धचारिका" नाम से धारावाहिक लेख प्रकाशित हो रहे थे। इन लेखों और चित्रों की संख्या लगभग १५० है। ये चित्र 'ग्लोबल विपश्यना पगोडा' की आर्ट-गैलरी में सुशोभित होंगे। इन पर अनवरत काम चल रहा है परंतु अभी तक सभी चित्र बन नहीं पाये हैं। इसलिए निर्णय लिया गया कि जो चित्र बन कर धम्मगिरि की आर्ट-गैलरी में लग गये हैं, उनकी एक अलग पुस्तक प्रकाशित कर दी जाय, ताकि जो लोग धम्मगिरि देखने के लिए आते हैं उन्हें इन चित्रों की, यानी बुद्ध के जीवन संबंधी घटनाओं के संबंध में सही जानकारी मिल सके। इस प्रकार २७ आलेखों (घटनाओं) और ३१ चित्रों की एक पुस्तक **'बुद्धजीवन-चित्रावली'** *नाम से प्रकाशित कर दी गयी है। इसमें बायें पृष्ठ पर चित्र हैं और सामने दाहिने पृष्ठ पर आलेख हैं। इससे भगवान बुद्ध के जीवन से संबंधित उन घटनाओं को समझना आसान हो जाता है और उनके बारे में फैली गलतफहमी भी दूर होती है। चूंकि इस पुस्तक का नाम "बुद्धजीवन-चित्रावली" रखा गया है इसलिए इसके शेष लेख फिलहाल इसी नाम से प्रकाशित होंगे। जिन्होंने यह पुस्तक नहीं पढ़ी है, उन्हें इन आलेखों से प्रेरणा मिलेगी और वे आधुनिक तकनीक से छपी इस अत्यंत सुंदर और प्रेरणास्पद पुस्तक 'बुद्धजीवन-चित्रावली' को देखने-पढ़ने की ओर उन्मुख होंगे। इसे केवल देख-पढ़ कर ही संतुष्ट न हो जायँ बल्कि विपश्यना का अभ्यास करके सद्धर्म से सही माने में लाभान्वित हों! सं.)*

चमत्कार पर रोक

उस समय राजगीर के श्रेष्ठी को एक बहुमूल्य चंदन-सार का गँठीला काठ मिला। तब उसके मन में हुआ – "क्यों न मैं इस चंदनगांठ का एक पात्र खरादवाऊं और उसे किसी योग्य व्यक्ति को दान में दे दूं।"

तब उसने उस चंदन-गांठ का एक पात्र खरादवा कर छीके में रखवाया। फिर उसे एक बांस के सिरे पर टँगवाया। उसे अधिक ऊंचा करने के लिए उस बांस के नीचे एक-पर-एक कई बांस बँधवा दिये। फिर यह घोषणा करवा दी कि "जो श्रमण या ब्राह्मण अर्हत हो और ऋद्धिमान हो, वह इस दान में दिये हुए चंदन के पात्र को उतार कर ले जाय। यह उसी का है।"

राजगीर के तत्कालीन अनेक प्रसिद्ध-प्रसिद्ध आचार्य वहां आये और प्रत्येक ने श्रेष्ठी से कहा – "गृहपति! मैं अर्हत हूं, ऋद्धिमान भी हूं। मुझे पात्र दो।"

"भंते! यदि आप अर्हत हैं, ऋद्धिमान हैं, तब यह पात्र तो दान हेतु दिया हुआ ही है, उतार कर ले जायँ।" तब यह सुन कर, सभी मुँह लटका कर चल दिये।

उस समय आयुष्मान **मौद्गल्यायन** और आयुष्मान पिंडोल भारद्वाज, पूर्वाह्न समय हाथ में पिंड-पात्र लेकर राजगीर में भिक्षाटन के लिये प्रविष्ट हुए। तब आयुष्मान पिंडोल भारद्वाज ने आयुष्मान मौद्गल्यायन से कहा – "**आयुष्मान महामौद्गल्यायन!** आप अर्हत हैं, और ऋद्धिमान भी। आप इस पात्र को उतार लाइये। यह पात्र आपके लिए ही है।" परंतु आयुष्मान मौद्गल्यायन ने इस सुझाव को स्वीकार नहीं किया।

इस पर आयुष्मान पिंडोल भारद्वाज ने सोचा, "मैं भी तो अर्हत हूं, और ऋद्धिमान भी। क्यों न मैं ही इस पात्र को उतार लाऊं।" यह निर्णय कर आयुष्मान पिंडोल भारद्वाज ने आकाश में उड़कर, उस पात्र को उतार लिया और तीन बार राजगीर की परिक्रमा करके लोगों को अपना चमत्कार दिखाया।

तदनंतर आयुष्मान पिंडोल भारद्वाज पात्र-सहित अपने निवास-स्थान की ओर चल दिया।

अनेक लोग भारद्वाज की प्रशंसा के नारे लगाते हुए आयुष्मान पिंडोल भारद्वाज के पीछे-पीछे चलने लगे। भगवान ने हल्ले को सुन कर आयुष्मान आनंद से पूछा, "आनंद! यह कैसा हल्ला-गुल्ला है?"

"भंते भगवान! आयुष्मान पिंडोल भारद्वाज ने राजगीर के श्रेष्ठी के पात्र को ऊंचे से उतार लिया। लोग इसी कारण उनकी प्रशंसा के नारे लगाते हुए उनके पीछे-पीछे चले आ रहे हैं। भगवान, इसी कारण यह हल्ला है।"

तब भगवान ने इस प्रकरण को लेकर, भिक्षु-संघ को एकत्र करवा, आयुष्मान पिंडोल भारद्वाज को धिक्कारते हुए कहा – "भारद्वाज! यह अनुचित हुआ, श्रमणों के प्रतिकूल हुआ, अयोग्य हुआ, अकरणीय हुआ। भारद्वाज! लकड़ी के इस निर्जीव बर्तन के

लिए कैसे तूने गृहस्थों को ऋद्धि-चमत्कार दिखाया। भारद्वाज! न यह अप्रसन्नों को प्रसन्न करने के लिए हुआ और न प्रसन्नों की प्रसन्नता बढ़ाने के लिए।"

इस प्रकार भारद्वाज को धिक्कारते हुए भगवान ने भिक्षुओं को कहा – "भिक्षुओ! गृहस्थों को ऋद्धि-चमत्कार न दिखाना चाहिए, जो दिखाये उसको **दुक्कट** (दुष्कृत) का दोष लगे।

"भिक्षुओ! इस पात्र को तोड़ कर, इसके टुकडे-टुकड़े कर दो। भिक्षुओं को अंजन पीसने के लिये दे दो।"

भगवान ने ठीक ही रोक लगायी। किसी भी धर्माचार्य द्वारा चमत्कार-प्रदर्शन अत्यंत खतरनाक होता है। इससे कोई गैरजिम्मेदार व्यक्ति जन-साधारण को ठग सकता है, उसका अनुचित शोषण कर सकता है। धर्म का ह्रास कर सकता है। अपनी मिथ्या प्रसिद्धि स्थापित करता है। अहंकार जगा कर अपना पतन करता है।

ग्लोबल विपस्सना फाउंडेशन

और

महापरिनिर्वाण एक्सप्रेस

बुद्धिस्ट सर्किट स्पेशल ट्रेन

भारतीय रेलवे (भारत सरकार) ने गत वर्ष से **"महापरिनिर्वाण एक्सप्रेस"** नामक पूर्णतया वातानुकूलित एक विशेष गाड़ी आरंभ की है। इसका विवरण इस वेबसाईट – www.railtourismindia.com पर देखा जा सकता है। रेलवे ने यही शेड्यूल विपश्यना के गंभीर साधकों के लिए भी प्रस्तावित किया है।

तदर्थ भारतीय रेलवे ने **"ग्लोबल विपश्यना फाउंडेशन"** को २१% की विशेष छूट देने का निर्णय किया है।

ध्यान दें कि यह विशेष छूट इस शर्त पर संभव हुई है कि २१% की यह राशि इस यात्रा पर जाने वाले विपश्यी साधकों की ओर से **ग्लोबल विपस्सना पगोडा** को दान में दी जायगी।

इस दान से विपश्यी यात्रियों को दो प्रकार से पुण्य अर्जित करने का अवसर प्राप्त होगा – एक तो वे यात्रा पर जायँगे और दूसरे 'ग्लोबल विपस्सना पगोडा' के निर्माण में दान दे सकेंगे।

इस छूट के अतिरिक्त रेल का पर्यटन विभाग बोधगया में बोधिवृक्ष के नीचे गंभीर साधकों के लिए सामूहिक साधना का एक सत्र आयोजित करने का प्रयास कर रहा है। यह सत्र महाबोधि मंदिर के बंद हो जाने पर होगा ताकि उस समय अन्य पर्यटकों के आने-जाने का कोलाहल न रहे।

इसी प्रकार का एक सामूहिक साधना सत्र कुशीनगर के मंदिर में भी आयोजित किया जायगा।

सामूहिक साधना का सत्र तभी संभव हो पायगा जबकि एक ट्रेन पर कम से कम ८ - १० विपश्यी साधक हों और उस दिन मंदिर परिसर में कोई अन्य कार्यक्रम न हो।

जो इस यात्रा पर जाना चाहते हैं और जो इसके लिए अपना नाम लिखाना (बुकिंग) चाहते हैं वे कृपया इस वेबसाइट– www.railtourismindia.com को देखें। इसके बारे में अधिक जानकारी के लिए भारतीय रेलवे द्वारा नियुक्त मि. अरुण श्रीवास्तव से इस नंबर पर संपर्क करें – मो. नं. ०९९७१४९६६६९.
ईमेल – arunsrivastava@irctc.com

अधिक जानकारी और सहयोग के लिए साधक 'ग्लोबल विपश्यना पगोडा' के **श्री मनीष शिंदे** से निम्न नं. पर संपर्क कर सकते हैं – मो. ०९३२३५२६४६२, ईमेल – manish@globalpagoda.org

भवतु सब्ब मङ्गलं।

घर-घर में पालि

पालि प्रशिक्षण के लिए धम्मगिरि पर योग्य व्यक्तियों के लिए विधिवत कक्षाएं चलती हैं। परंतु पालि तिपिटक को समझने और बुद्धवाणी का लाभ उठाने के लिए किसी प्रमाण-पत्र की आवश्यकता नहीं होती। अतः पालि के सामान्य ज्ञान के लिए **"घर-घर में पालि"** अभियान चलाते हुए, पालि प्रशिक्षकों के माध्यम से स्थान-स्थान पर **७-दिवसीय पालि प्रशिक्षण कार्यशालाओं** का आयोजन किया जा रहा है। इच्छुक साधक-साधिकाएं निम्न स्थान पर आयोजित इस कार्यशाला का लाभ ले सकते हैं।

पालि प्रशिक्षण कार्यशालाः (१) तिथिः १-११ से ९-११-२००८ (११ बजे तक).

संपर्कः श्री उपेंद्र पटेल, १८, श्रद्धा कांप्लेक्स, दूसरी मंजिल, म्युनिसिपल कार्यालय के सामने, मेहसाना-३८४००१, फोनः (०२७६२) २५४६३४, २५३३१५. मोबा. ०९३७६३-५३३१५, Email: upendrakpatel@rediffmail.com

(२) **तिथि :** दि. १-१२ से ९-१२-२००८. (केवल अंग्रेजी भाषियों के लिए) **स्थानः** कोठारी फार्म हाऊस, जयपुर-अजमेर राजमार्ग से २ किमी. अंदर, भानक्रोटा-जयसिंहपुरा रोड, भानक्रोटा, जयपुर.

संपर्कः श्री अनिल मेहता, ईमल– anilmehta02@yahoo.com

विपश्यना विशोधन विन्यास, धम्मगिरि पर पालि प्रशिक्षण

'वर्ष २००८-२००९ के लिए विज्ञप्ति'

एक महीने का सघन 'पालि-हिंदी' प्रारंभिक पाठ्यक्रम

यह पाठ्यक्रम वर्ष २००५ में प्रारंभ हुआ था। इस वर्ष इसका चौथा सत्र है। यह सत्र **२३ नवंबर २००८** (सुबह) से **२० दिसंबर २००८** (सुबह) तक बिना किसी अवकाश के चलेगा।

आवेदन-पत्र जमा करने की **अंतिम तिथि १५ सितंबर २००८** है।

प्रवेश योग्यताएं –

ए) योग्यताएं – वे साधक जिन्होंने (१) पांच दस दिवसीय विपश्यना शिविर, तथा (२) एक सतिपट्ठान शिविर, किये हों (३) पंचशील का पालन करते हुए, (४) दो वर्ष से प्रतिदिन दो घंटे की नियमित साधना करते हों एवं (५) विद्या के प्रति समर्पित हों। बीस दिवसीय शिविर किये हुए साधक को वरीयता दी जायगी।

इस पाठ्यक्रम के पंजीकरण हेतु क्षेत्रीय आचार्य की अनुमति होनी आवश्यक है।

बी) शैक्षणिक योग्यता – १२ वीं कक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए। स्नातक को वरीयता दी जायगी।

एक महीने का सघन 'पालि-हिंदी' उच्च पाठ्यक्रम

यह पाठ्यक्रम वर्ष २००६ में पहली बार प्रारंभ किया गया था। इस वर्ष इसका तृतीय सत्र है। इस वर्ष यह पाठ्यक्रम **२१ दिसंबर २००८ (सुबह) से १७ जनवरी २००९ (सुबह)** तक बिना अवकाश के चलेगा

आवेदन-पत्र जमा करने की **अंतिम तिथि १५ सितंबर २००८** है।

प्रवेश योग्यताएं –

ए) योग्यताएं- ➲ इस पाठ्यक्रम के लिए उपरोक्त योग्यताओं के साथ व्ही. आर. आई. द्वारा आयोजित एक महीने का सघन पालि-हिंदी **प्रारंभिक पाठ्यक्रम** पूरा किया होना अनिवार्य है। उन विपश्यी साधकों को जिन्हें पालि का प्रारंभिक ज्ञान है तथा जिनके पास बाकी योग्यताएं हैं, उनके आवेदन पत्र पर भी विचार किया जायगा। ➲ इस पाठ्यक्रम के पंजीकरण हेतु भी क्षेत्रीय आचार्य की अनुमति होनी आवश्यक है। **बी) शैक्षणिक योग्यता-** ➲ १२ वीं कक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए। स्नातक की वरीयता दी जायगी।

इन दोनों पाठ्यक्रमों के लिए लगभग चौबीस (१२ पुरुष एवं १२ महिला) विद्यार्थियों का पंजीकरण किया जायगा।

इनके लिए आवेदन-पत्र कृपया **विपश्यना विशोधन विन्यास,** धम्मगिरि, इगतपुरी से प्राप्त कर सकते हैं।

Postal Regn. No. LII/REN./RNP-46/2006-08

Postal Licence No. LII/RNP-WPP-03

नये उत्तरदायित्व

आचार्य

१. कु. नीला हलाई, भुज/यू. के.
Spread of Dhamma among Indian expatriates in Europe

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

१-२. श्री बाबू रामसिंह एवं श्रीमती शांति चौहान, ग्वालियर
3. & 4. U San Lwin & Daw Tin Tin Naing, *Myanmar*
5. Daw Hla Myint, *Myanmar*
6. Daw Nyo Nyo Win, *Myanmar*
7. Mrs. Chin-ing Helen Chen, *Taiwan*
8. Ms. Maria Luisa Ferro, *Italy*
9. Mrs. Robin Curry, *USA*

बालशिविर शिक्षक

१. श्री अशोक कुमार पटेल, वीसनगर
२. श्री गिरिश कुमार चौधरी, मेहसाना
३. श्रीमती स्मितावेन वोरा, राजकोट
४. श्री तेजसभाई गोडा, राजकोट
५. कु. मधुवेन सापरिया, राजकोट
६. श्री राजेशभाई पटेल, राजकोट
७. श्रीमती जागृतिवेन कोठारी, राजकोट
8. U Htay Myint, *Myanmar*
9. U Thein Htay, *Myanmar*
10. Daw Nywe, *Myanmar*
11. Daw Myint Myint San, *Myanmar*
12. Daw Kan Moe Moe, *Myanmar*
13. Daw Khin Aye Aye, *Myanmar*
14. Ms. Ellen Goldstein, *USA*
15. Ms. Janene Case, *USA*
16. Mr. Mathew Aaron, *USA*
17. Mr. Rajesh Bawankule, *USA*
18. Mrs. Ujwala Khante, *USA*
19. Mr. Tony Foley, *USA*
20. Mrs. Rosa Kittsteiner, *USA*

दोहे धर्म के

सदा जूझता ही रहे, करे अथक पुरुषार्थ।
उस श्रमजीवी श्रमण को, होय प्रकट परमार्थ॥

जहां जहां इस स्कंध में, सम्यक स्मृति जग जाय।
वहीं दिखे उत्पाद-व्यय, तो अमृत मिल जाय॥

क्षण क्षण प्रज्ञा जागती, रहे जागता होश।
तो कैसे सर पर चढ़े, काम राग आक्रोश॥

पूर्ण सत्य के होश में, सतत सजग जो होय।
निर्भय हो, निर्वैर हो, सतत निरापद होय॥

क्षण क्षण मंगल ही जगे, क्षण क्षण सुख ही होय।
क्षण क्षण अपने कर्म पर सावधान यदि होय॥

काया चित्त प्रवाह पर, सजग निरंतर होय।
नए कर्म बांधे नहीं, क्षीण पुरातन होंय॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोनः 2493 8893, फैक्सः 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

जाण्यो समझ्यो धरम नै, पर न कर्‌यो व्यवहार।
तो बिरथा बोझां मर्‌यो, लियां सीस पर भार॥

धारण करै तो धरम है, नातर कोरी बात।
सूरज उग्यां प्रभात है, नातर काळी रात॥

सील सील बोलत रह्यो, करतो रह्यो विवाद।
मिसरी मिसरी बोलतां, कैयां चाखै स्वाद?

धरम पठण कल्याणप्रद, धरम स्रवण कल्याण।
पण साचो कल्याण तो, धारण ह्वै जद जाण॥

कथणी करणी बिच इसी, देखी नहीं दुभांत।
कवै जात है करम स्यूं, मानै जन्मां जात॥

सहज सरल कथनी घणी, करणी कठिण अपार।
कोरी कथनी बांझड़ी, करणी करदे पार॥

एक साधक
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-422403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, 69- बी रोड, सातपुर, नाशिक-422007. **बुद्धवर्ष** 2552, **भाद्रपद पूर्णिमा,** 15 **सितंबर,** 2008

वार्षिक शुल्क रु. 30/-, US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. 500/-, US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं.** 19156/71. Regn. No. LII/REN/RNP-46/2006-08

Licenced to post without Prepayment of postage -- Licence number-- LII/RNP-WPP-03
Posting day- Purnima of Every Month, Posted at Igatpuri-422403, Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086
फैक्स : (02553) 244176
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vri.dhamma.org